विद्यालयी शिक्षा में उद्यमिता शिक्षा की शुरुआत क्यों?

मनोज कुमार*

हमारे देश में अकादमिक शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा में तालमेल का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, इस बात की पुष्टि 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' में भी की गई है। व्यावसायिक शिक्षा की अपेक्षा आज भी अकादमिक शिक्षा को ही अधिक महत्व दिया जाता है। अकादमिक शिक्षा या यह कहें कि मुख्यधारा की शिक्षा बच्चों व बड़ों में एक सुरक्षा का भाव लाकर विद्यार्थियों की रचनात्मकता, मौलिकता, समस्या-समाधान कौशल, जोखिम लेने की शक्ति में कहीं न कहीं एक रुकावट डालती है। अकादमिक शिक्षा व्यावहारिक समझ, तकनीकी कौशल और अन्य कौशल आधारित शिक्षा की उपेक्षा करती है। यही कारण है कि विद्यालयी शिक्षा पूरी करने के बाद जब हमारे विद्यार्थी वास्तविक जीवन के धरातल पर अपना पहला कदम रखते हैं तो वहाँ उन्हें निराशा का सामना करना पड़ता है। हमारे बहुत सारे विद्यार्थी बेरोज़गारी की समस्या से जूझते हैं उनके पास कोई नौकरी नहीं होती या कोई विशेष हुनर नहीं होता हैं जिससे वे रोज़गार पा सकें या अपना कोई रोज़गार या व्यवसाय शुरू कर सकें। कुछ व्यवसायों को छोड़कर, विद्यालयी शिक्षा उनके रोज़गार में उपयोग की जाने वाली शिक्षा से बिल्कुल अलग होती है। उद्यमिता के द्वारा विद्यार्थियों को स्वरोज़गार व व्यवसाय के माध्यम से रोज़गार के अवसर सृजित करने के लिए तैयार किया जा सकता है। उद्यमिता विद्यार्थियों के लिए ज्ञान, योग्यता, नवीन विचारों, जोखिम, रचनात्मकता और कौशल प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह लेख उद्यमिता, उद्यमिता शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता और उससे संबंधित 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' में जुड़ें विभिन्न पहलुओं तथा उद्यमिता शिक्षा की शुरुआत शिक्षा के किस स्तर से की जाए और क्यों? और इसे बढ़ावा देने के लिए शिक्षक, विद्यालय प्रशासन, समाज एवं सरकार मिलकर कैसे विद्यार्थियों की मदद कर सकते हैं? पर प्रकाश डाला गया है।

भारत में बेरोज़गारी अधिक है। इसके कई कारण रहे हैं, पर उन सब में से एक मुख्य कारण हमारी मुख्यधारा की अकादमिक विद्यालयी शिक्षा भी रही है। विद्यालयी शिक्षा प्रणाली के द्वारा शिक्षा को जहाँ व्यवसाय और रोज़गार के नए अवसरों का सृजन करना चाहिए था वहाँ उसने इसके स्थान पर जाने-अनजाने में अकादमिक शिक्षा पर हमारी निर्भरता को अधिक बढ़ाया है। व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता को वैसे तो पहले की दोनों शिक्षा नीतियों 1968 एवं1986 में भी महसूस किया गया और उसे क्रियान्वित करने पर बल दिया गया। परंतु परिणाम आशा के अनुरूप प्राप्त नहीं हुए। इस बात की पुष्टि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में दिए गए बिंदु 16 में दिए गए औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा संबंधी आँकड़ों से होती है।

**टी.जी.टी.* सामाजिक विज्ञान, राजकीय बालक सर्वोदय माध्यमिक विद्यालय, मोती बाग-1, नई दिल्ली 110021

तालिका 1—12वीं पंचवर्षीय योजना (2012–2017) के अनुमान के अनुसार 19–24 आयु वर्ग के औपचारिक व्यावसायिक कार्यबल का प्रतिशत दर

देश	प्रतिशत दर
भारत	5% से भी कम
सयुक्त राज्य अमेरिका	52%
जर्मनी	75%
दक्षिण कोरिया	96%

स्रोत— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अनुच्छेद 16

तालिका 1 में दिए गए आँकड़े भारत में व्यावसायिक शिक्षा की स्थिति को स्पष्ट करते हैं और इसमें तेज़ी से विस्तार की आवश्यकता की भी पुष्टि करते हैं। अगर हम उद्यमिता की बात करें तो यह हमें अकादमिक शिक्षा ज्ञान से बाहर निकाल एक व्यावहारिक समझ देती है, भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करती है। नवीन प्रतिभाओं, विचारों और कौशलों को विकसित करती है जो वर्तमान और भविष्य के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति है। आज शिक्षा के क्षेत्र में उद्यमिता शिक्षा पर बहुत गहराई और जोश के साथ विचार किया जा रहा है। व्यक्तिगत विकास, आर्थिक विकास, रोज़गार सृजन, सामाजिक परिवर्तन, गुणवत्ता वृद्धि आदि को उद्यमिता के परिणाम के रूप में देखा जा रहा है और विद्यालयी शिक्षा में बदलाव की आवश्यकता महसूस की जा रही है। उद्यमिता क्या है? क्या उद्यमिता रचनात्मकता, नवाचार और जोखिम है? क्या उद्यमिता व्यावसायिक शिक्षा है? क्या उद्यमिता और व्यावसायिक शिक्षा में आपस में कोई संबंध है? आइए, सबसे पहले हम उद्यमिता को समझने का प्रयास करते हैं।

उद्यमिता

उद्यमिता एक ऐसी मानसिक सोच है जिसमें सकारात्मक जुनून, जोखिम लेने की क्षमता, निरंतर कार्य करने की प्रकृति, सकारात्मक दृष्टिकोण व सृजनात्मकता और व्यवसाय स्थापित करने की तत्परता है। यह जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। यह नवीनता, मौलिकता, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान, रचनात्मक कौशल को बढ़ावा देने से संबंधित है। यह विद्यार्थियों को लगातार अपने संज्ञान में सुधार करने, उनके विचारों और कार्यों को समायोजित करने और अधिक दिशात्मक, सुसंगत और सार्थक बनाने में मदद करता है। उद्यमिता में नए अवसरों को पहचानने की क्षमता और अप्रत्याशित परिदृश्य में जोखिम लेने की इच्छा शामिल है। उद्यमिता, कला और विज्ञान दोनों है। यह विज्ञान है क्योंकि यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नए शोधों, नए जोखिमों को लेने व पुराने व वर्तमान को सत्यापित करने व उनमें परिवर्तन कर कुछ नया सर्जन अर्थात नवाचार करने का समर्थन करता है। यह एक कला है क्योंकि यह रचनात्मकता, मौलिकता, नवीनता को बढ़ावा देती है।

रचनात्मकता, नवाचार, जोखिम और उद्यमिता के बीच संबंध

उद्यमिता का रचनात्मकता, नवाचार और जोखिम से सीधा व प्रत्यक्ष संबंध देखा जा सकता है। इसलिए यदि हम अपने बच्चों में रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ाते हैं तो उद्यमिता का गुण उनमें अपने आप विकसित होने लग जाता है। हम यह कह सकते हैं कि जब हम बच्चों में उद्यमिता का गुण विकसित करते हैं तो रचनात्मकता, नवाचार व जोखिम लेने

की क्षमता बच्चों में स्वत: विकसित होने लगती है। ये सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं अब प्रश्न यह है कि रचनात्मकता, नवाचार और जोखिम क्या हैं?

रचनात्मकता

रचनात्मकता को अक्सर नए, असामान्य या अद्वितीय विचारों की अवधारणा के लिए दिमाग की एक अद्भुत क्षमता के रूप में परिभाषित किया जाता है। रचनात्मकता एक मानसिक क्षमता है जिसमें कोई भी सक्षम हो सकता है। यह केवल विशेष व्यक्तियों या विशेष धर्म, आयु, समुदाय, जाति, जेंडर, राज्य या देश आदि तक सीमित नहीं है।

नवाचार

दूसरी ओर नवाचार वह प्रक्रिया जो हमारे दूरदर्शी विचारों को वास्तविक दुनिया के समक्ष उत्पादों, सेवाओं या उन्नत मूल्य की प्रक्रियाओं के रूप में लाने या बदलने में मदद करती है। इस तरह के परिवर्तन का परिणाम हमेशा विकासवादी होता है। इस प्रकार नवाचार का अर्थ किसी वस्तु को मूल्यवान करना व उपयोगी बनाने के लिए नए विचारों को क्रियान्वित करना या विचार प्रबंधन की प्रक्रिया है।

जोखिम

जोखिम वह मानसिक स्थिति है जो हमें असफलता से डराती है, परंतु उद्यमिता जोखिम को सहने और उसका सामना कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है और हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाती है।

रचनावाद, नवाचार, जोखिम तीनों उद्यमिता में शामिल हैं और इन सभी का लक्ष्य एक ही है— सभी बच्चों की कुशलताओं में विकास कर उन्हें आर्थिक रूप से निर्भर बनाने में मदद करना। रचनात्मकता केंद्रीय बिंदु है जो एक प्रक्रिया के रूप में चलती है और इसे एक नवाचार में बदल देती है और जिसका उपयोग आगे चलकर उद्यमिता को ही विकसित करने के लिए किया जाता है जो एक व्यवसाय को जन्म दे सकता है। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि रचनात्मकता कुछ नया करने या किसी अन्य पारंपरिक तरीके से कुछ अलग करने की क्षमता है, जोखिम नई-नई चुनौती का सामना कर नवाचार करने, ज्ञात विधियों पर निर्माण करने या मौजूदा विचारों को विस्तार देने या किसी दी गई वस्तु पर सुधार करने की क्षमता है।

क्या उद्यमिता व्यावसायिक शिक्षा है?

उद्यमिता पूर्ण रूप से व्यावसायिक शिक्षा नहीं है। यह वह है जिसमें रचनात्मकता, नवाचार और जोखिम को लेने के लिए विद्यार्थी को आत्म-स्वतंत्रता है। जबकि व्यावसायिक शिक्षा एक प्रकार का प्रशिक्षण है, जो छात्रों को एक विशिष्ट कार्य करने के लिए आवश्यक विशेष कौशल सिखाता है और जिसके द्वारा विद्यार्थी एक सक्रिय और अत्यधिक अनुभवी पेशेवर की देख-रेख में एक विशिष्ट व्यवसाय के मूल सिद्धांतों और क्षमताओं को सीखते हैं और फिर उन्हीं कौशलों का उपयोग कुछ चुनिंदा व्यवसायों

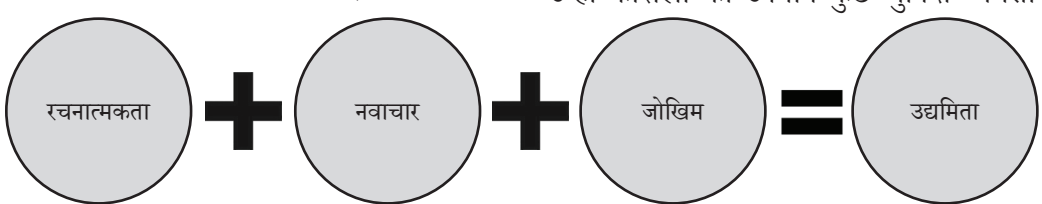

चित्र 1

में करते हैं। उद्यमिता और व्यावसायिक कौशल में प्रत्यक्ष व पारस्परिक संबद्ध पाया जाता है। यह व्यावसायिक कौशलों में निखार लाता है, उनमें नवाचार लाता है। उद्यमिता, व्यवसाय के लिए तैयार करने में मदद करती है। यह सभी क्षमताएँ एक बच्चे को सृजनात्मक रूप से सोचने और पहले से अज्ञात या अनदेखी समस्याओं का सामना करने के लिए तैयार करती हैं। रचनात्मकता, नवाचार और जोखिम उद्यमिता को बढ़ावा देने लिए महत्वपूर्ण है और वे सभी एक-दूसरे से संबंधित हैं। उद्यमिता ऐसी वाहक है जो रचनात्मकता और नवीनता को संचालित करती है। नवाचार नई माँग पैदा करने में सहायता करता है और उद्यमिता बाज़ार में नवाचार लाने और नए व्यवसाय पैदा करने में मदद करती है।

उद्यमिता व व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता

यूनेस्को ने अंतर-क्षेत्रीय संगोष्ठी (2008) में उद्यमिता शिक्षा के बारे में कहा कि, "उद्यमिता शिक्षा सभी प्रकार के अनुभवों से बनी है, जो विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अवसरों तक पहुँचने और बदलने की क्षमता और दृष्टि प्रदान करती है। यदि हम उद्यमिता शिक्षा की परिभाषा को विकसित और विकासशील देशों के नज़रिए से देखें तो दोनों देशों की परिभाषा में अंतर दिखाई देता है।" उद्यमिता शिक्षा शब्द मुख्य रूप से यूनाइटेड किंगडम जैसे देशों में जहाँ व्यक्तिगत विकास, मानसिकता, कौशल और क्षमताओं पर अधिक व्यापक रूप से ध्यान केंद्रित करने के रूप में किसी बॉक्स के बाहर एक रचनात्मकता और नवाचार सोच है, वहीं भारत जैसे विकासशील देशों में उद्यमिता शिक्षा शब्द को उद्यम स्थापित करने और स्वरोज़गार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के विशिष्ट संदर्भ के लिए परिभाषित किया गया है। उद्यमिता व व्यावसायिक शिक्षा निम्न कारणों से आवश्यक है—

- **बेरोज़गारी को स्वरोज़गार में बदलने के साथ-साथ अन्य लोगों के लिए भी रोज़गार पैदा करने के लिए**— जोखिम उठाने व उसे समाप्त न होने देने की क्षमता का विकास करने के साथ उद्यमिता शिक्षा नई पीढ़ी को अपनी क्षमता की पहचान करने का अवसर देगी, जिसके अनुसार वे स्वरोज़गार के अवसर पैदा कर सकते हैं या अपने लिए रोज़गार ढूँढ़ सकते हैं। उद्यमिता शिक्षा विद्यार्थियों को किसी व्यवसाय के लिए पहल करने, ज़िम्मेदारी और जोखिम लेने के लिए अपनी रचनात्मकता, कल्पना को विकसित करने, नए आविष्कारों और शोधों को बढ़ावा देने व उनका उपयोग करने की अनुमति देती है।
- **अकादमिक शिक्षा का व्यावसायिक शिक्षा के साथ तालमेल के लिए**— राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (2013) में माना गया कि हमारे देश की अकादमिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण, सामान्य शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के बीच, व्यावसायिक शिक्षा और अकादमिक शिक्षा में उचित तालमेल का अभाव होने के साथ एक बड़ा अंतर है।
- **वर्ष 2025 तक 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को विद्यालय और उच्चतर शिक्षा प्रणाली**

के माध्यम से व्यावसायिक अनुभव प्रदान करने के लिए— *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के बिंदु 16 में इस बात को स्वीकार किया गया है कि हमारे देश में आज तक भी औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा की स्थिति मज़बूत नहीं है। आज भी व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था ड्रॉप-आउट बच्चों तक सीमित है या फिर कक्षा 8 के बाद से अनौपचारिक या फिर अव्यवस्थित रूप में दी जाती है जिसके कारण बच्चों व बड़ों का रुझान अकादमिक शिक्षा ग्रहण करने पर अधिक रहता है जिससे रोज़गार व व्यवसाय के नए अवसर पैदा नहीं हो पाते। इसलिए वर्ष 2025 तक 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को विद्यालय और उच्चतर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से व्यावसायिक अनुभव प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया है।

- **वर्तमान व भविष्य की चुनौतियों के लिए मानसिक व कौशल के रूप में तैयार करने के लिए**— व्यावसायिक शिक्षा को गौण मानते हुए हमेशा से इसे हाशिये पर रखा जाता है। अकादमिक शिक्षा को व्यावसायिक शिक्षा कि तुलना में ज़्यादा सुरक्षित व भरोसेमंद माना जाता है जिसके कारण आज हमें अपनी मानसिकता में परिवर्तन करने की आवश्यकता है और उद्यमिता शिक्षा हमें इसके लिए तैयार करती है।
- **6 "अ" का विकास करने के लिए**— (1) आत्मविश्वास, (2) आत्मप्रतिभा, (3) आत्मसम्मान, (4) आत्मनिर्भरता, (5) आत्म स्वरोज़गार और (6) अर्थव्यवस्था की गति को बढ़ावा देने के लिए उद्यमिता एक सशक्त माध्यम है।

उद्यमिता शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा किए गए कुछ महत्वपूर्ण प्रयास एवं सुझाव

- **राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2008)**— राष्ट्रीय ज्ञान आयोग, भारत सरकार ने शिक्षा, नवाचार और उद्यमिता के बीच संबंधों का अवलोकन किया और उद्यमिता को बढ़ाने पर बल दिया।

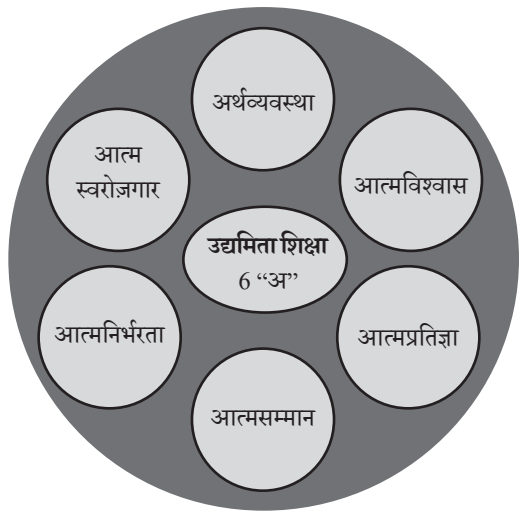

चित्र 2

- **राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (2013)**— विद्यार्थियों को योग्यता के वांछित स्तर, नौकरी बाज़ार में बदलाव और उपयुक्त समय के साथ उनकी दक्षताओं को और बढ़ाने के लिए अतिरिक्त कौशल के अधिग्रहण पर बल देता है।
- **कौशल विकास और उद्यमिता के लिए राष्ट्रीय नीति 2015**— भारत की पहली एकीकृत नीति 2 जुलाई 2015 को घोषित की गई है इसके अंतर्गत उद्यमिता शिक्षा से संबंधित कुछ प्रमुख उद्देश्यों को शामिल किया

गया, जैसे— उद्यमी संस्कृति को बढ़ावा देना, शिक्षा प्रणाली में उद्यमिता को कारगर बनाना, सामाजिक उद्यमिता और ज़मीनी स्तर पर नवाचारों को बढ़ावा देना, समावेशिता को बढ़ावा देना आदि।

- **उद्यमिता मानसिकता पाठ्यक्रम (ई.एम.सी. 2019)**— पाठ्यचर्या वह आधार है जिसे हम अपने बच्चों पर विद्यालय व शिक्षक के माध्यम से उपयोग करते हैं। इस प्रकार पाठ्यचर्या के माध्यम से उद्यमिता शिक्षा को बच्चों तक संप्रेषित किया जा सकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए दिल्ली की शिक्षा प्रणाली में 9–12 कक्षा के विद्यार्थियों के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए 2019 में दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में उद्यमिता मानसिकता पाठ्यक्रम (ई.एम.सी.) लागू किया गया। ई.एम.सी. का उद्देश्य विद्यार्थियों के बीच उद्यमशीलता की मानसिकता पर काम करना है। इस उद्यमिता पाठ्यक्रम (ई.एम.सी.) के अंतर्गत निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं, जैसे— विद्यार्थियों को विद्यालय स्तर पर ही भविष्य में उनकी पसंद की नौकरी व पेशों के बारे में जागरूक करना, उन्हें नवप्रवर्तन, रचनात्मकता और जोखिम लेने के लिए मानसिक रूप से तैयार करना, विभिन्न प्रकार के कौशल और प्रौद्योगिकी में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करना, विद्यार्थियों में उद्यमशीलता के गुणों को विकसित करना और उनका पोषण करना, रोज़गार के क्षेत्र में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए मानसिक रूप से मज़बूत बनने के लिए खुद को प्रेरित करना, उन्हें नौकरी के पीछे दौड़ने वाला न बनाकर स्वरोज़गार और रोज़गार सृजनकर्ता बनाना आदि।
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**— इस नीति के अनुसार सरकार द्वारा राष्ट्रीय समिति कमेटी फ़ॉर दी इनटीग्रेशन ऑफ़ वोकेशनल एजुकेशन का गठन किया जाएगा। विद्यालय से कॉलेज, कॉलेज से विश्वविद्यालय तक चरणबद्ध तरीके से व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को मुख्य धारा की शिक्षा से समन्वित किया जाएगा और इसकी शुरुआत आरंभिक वर्षों में व्यावसायिक शिक्षा के अनुभव प्रदान कराते हुए सुचारू रूप से प्रारंभिक कक्षाओं से होते हुए आरंभिक शिक्षा तक की जाएगी। इसके अलावा निम्न बिंदुओं पर ध्यान दिया जाएगा—
  - व्यवसाय से जुड़े कौशलों का प्रशिक्षण पर ज़ोर
  - माध्यमिक स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत करने पर बल।
  - स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा हब स्पोक मॉडल व कार्यशाला स्थापित करने पर बल।
  - व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्रों में भी गैर-सरकारी संगठनों की सहायता ली जाए।
  - लोक विद्या अर्थात भारत में विकसित महत्वपूर्ण व्यावसायिक ज्ञान से जुड़े विषयों को व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए सुगम बनाया जाए।
  - दूरवर्ती शिक्षा के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा का प्रसार किया जाए व फोकस क्षेत्रों का चुनाव किया जाए।
  - कौशल विकास में पाए जाने वाले अंतर व दूरी को समाप्त करने का प्रयास किया जाए।

बिजनेस ब्लास्टर्स प्रोग्राम (2021)

यह कार्यक्रम 'उद्यमिता मानसिकता पाठ्यक्रम'' के तहत दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में लागू किया गया है, जिसका उद्देश्य विद्यालय स्तर पर युवा उद्यमियों का विकास करना है। इस कार्यक्रम के तहत कक्षा 11वीं और 12वीं के विद्यार्थियों को व्यवसाय शुरू करने के लिए राशि 2,000 ₹ प्रदान की गई।

उद्यमिता शिक्षा किस स्तर से शुरू कराई जाए और क्यों?

प्रायः शिक्षा शब्द की जब भी हम बात करते हैं तब सबसे पहले हमारे दिमाग में एक ही बात आती है— विद्यालय, शिक्षक, समय-सारणी, पाठ्यचर्या और एक औपचारिक शिक्षा प्रणाली। जब भी हम उद्यमिता को शिक्षा के साथ जोड़ने की बात करते हैं तब हमें लगता है कि इससे बच्चे पर पाठ्यचर्या के भार के साथ तनाव और अधिक बढ़ेगा क्योंकि तब हम बच्चों की आयु के साथ सीखने के स्तर को अधिक महत्व देते हैं। जबकि हम दो बातें भूल जाते हैं कि— (1) शिक्षा का मतलब केवल औपचारिक शिक्षा से नहीं है। शिक्षा किसी भी रूप में चाहे स्वतंत्र रूप से अथवा अनौपचारिक ढंग से भी प्रदान और ग्रहण की जा सकती है। इसके लिए एक दृढ़ संरचित व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होती और उद्यमिता शिक्षा का प्रयोजन कोई संरचित प्रशिक्षण देना नहीं होता (2) प्रारंभिक स्तर के बच्चों के सीखने की क्षमता बहुत अधिक होती है, बशर्ते कि उन्हें उनकी ऊर्जा का उपयोग व कल्पना को विस्तार देने के लिए उपयुक्त स्वतंत्र वातावरण, अवसर, सुविधाएँ व प्रोत्साहन दिया जाए। इस स्तर पर बच्चे बड़ों की अपेक्षा अधिक प्रयास करते हैं और जल्दी से किसी चीज़ को अपनी इच्छानुसार से बीच में ही जल्दी से अधूरा नहीं छोड़ते अर्थात हार नहीं मानते।

जब हम सरकार द्वारा किए गए उपरोक्त प्रयासों का अध्ययन करते हैं तो एक बात मुख्य रूप से निकल कर हमारे सामने आती है कि उद्यमिता शिक्षा को माध्यमिक व उच्चतर स्तर प्रदान करने का प्रयोजन सरकारों व शैक्षिक नीतियों के द्वारा विशेष रूप से किया गया है। उद्यमिता शिक्षा बड़े बच्चों के लिए बहुत ज़रूरी है, इस बात पर तनिक भी संदेह नहीं किया जा सकता परंतु यह भी सत्य है कि इसकी शुरुआत की ज़रूरत प्रारंभिक स्तर से ही शुरू हो जाती है। इसका उदाहरण हम फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली में देख सकते हैं जहाँ 3–12 वर्ष के बच्चों के लिए 'दुनिया को बदलने का विचार रखते हैं' उद्यमिता प्रोग्राम चलाया गया है और बच्चों के लिए एक लचीली पाठ्यचर्या का प्रावधान रखा गया है ताकि बच्चे अपनी बाल्यावस्था से ही मानसिक रूप से तैयार हो जाएँ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी यह कहती है, बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास छह वर्ष की आयु तक हो जाता है, जिससे स्पष्ट होता है कि धीरे-धीरे बच्चे अपना स्वयं का नज़रिया, निर्णय शक्ति, तर्कशक्ति , सृजन शक्ति, व्यवहार कौशलों व आदतों आदि का निर्माण करने लगते हैं। प्रारंभिक स्तर पर बच्चे बहुत जिज्ञासु व कल्पनाशील होते हैं वे अपनी कल्पना व सोच को वास्तविक रूप देना चाहते हैं और लगातार कुछ न कुछ नया करना चाहते हैं। हम प्रारंभिक स्तर के बच्चों में अग्रिलिखित विशेषताएँ देखते हैं—

- **सृजनात्मकता**— छोटे बच्चे बड़े बच्चों की तुलना में चुस्त, सजग और ऊर्जावान होते हैं। नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (NASA, 2018) ने मनुष्यों की रचनात्मक प्रतिभा पर एक अध्ययन किया ताकि यह पता लगाया जा सके कि हम कितने वर्षों में कितने रचनात्मक बने हुए हैं। इस अध्ययन के परीक्षा-परिणाम चौंकाने वाले पाए गए, पाँच साल में जहाँ 98 प्रतिशत बच्चे सर्जनात्मक प्रतिभा की श्रेणी में थे यह संख्या 15 साल के बच्चों के लिए 12 प्रतिशत और व्यस्कों के लिए दो प्रतिशत तक हो गई। इसके पीछे मुख्य कारण शिक्षा प्रणाली है, विशेषकर पारंपरिक मुख्यधारा की कक्षा-शिक्षण प्रक्रिया।
- **असफल होने का भय नहीं**— छोटे बच्चे बड़ों की अपेक्षा अपनी असफलता से कम डरते हैं। वे असफल होने पर भी लगातार प्रयोग करना पसंद करते हैं। असफलता के प्रति डर व शर्म का भाव हम अभिभावक, शिक्षक व समाज आदि ही पैदा करते हैं।
- **जोखिम का भय नहीं**— छोटे बच्चों में बड़ों की अपेक्षा भय का स्तर बहुत कम होता है वे कोई भी नई चुनौती लेने से नहीं घबराते। वे परिणाम से ज़्यादा कार्य की प्रक्रिया पर ज़्यादा केंद्रित रहते हैं। उनके लिए 10 रुपये का खिलौना भी वही काम करता है जो एक हज़ार का करता है अर्थात उसके साथ भी वे वही प्रयोग करते हैं जो दस रुपये के खिलौने से करते हैं। यही कारण है कि तकनीकी चीज़ें जैसे मोबाइल, कंप्यूटर आदि बच्चे बड़ों की अपेक्षा जल्दी व बिना किसी भय के सीखते हैं।
- **प्रेरणा और उत्सुकता का अभाव न होना**— यदि इस स्तर पर बच्चों को कुछ करने से रोका न जाए तो पाएँगे कि छोटे बच्चे ज़्यादा आत्म प्रेरित, उत्सुक और अपनी धुन में लगे रहते हैं और विभिन्न अवसरों पर स्वयं अपनी प्रतिभा को दिखाने के लिए स्व-प्रेरित रहते हैं।
- **कम आर्थिक निर्भरता**— छोटे बच्चे छोटे-छोटे पुराने सामानों से भी कई जुगाड़ बना लेते हैं। वे कबाड़ से जुगाड़ बनाने का हुनर रखते हैं इसलिए उन्हें ज़्यादा आर्थिक निर्भरता की आवश्यकता नहीं होती।
- **जवाबदेही न होना**— इस स्तर के बच्चों को अपने प्रयोगों व आविष्कारों के लिए किसी के सामने जबावदेह भी नहीं होना पड़ता जिससे वे किसी तनाव में नहीं आते और यह उन्हें और रुचि के साथ काम करने की प्रेरणा देता है।
- **हँसी का पात्र बनने का भय न होना**— बड़े बच्चे अधिकतर अपनी प्रतिभा को दिखाते हुए डरते व शरमाते हैं कि कहीं वे हँसी के पात्र न बन जाएँ, जबकि छोटे बच्चे अपनी प्रतिभा को दिखाना चाहते हैं कि उन्हें हम अधिकतर टोककर बैठा देते हैं।
- **ईर्ष्या का अभाव**— इस स्तर के बच्चे टीम भावना से नि:स्वार्थ काम करना पसंद करते हैं। कोई उनसे आगे क्यों हैं? वे इस तुलना में जल्दी से नहीं फँसते बल्कि सहयोग की भावना से अपनी मित्र मंडली को साथ लेकर काम करते हैं। इस प्रकार छोटे बच्चों में ईर्ष्या की भावना बड़ों के तुलना में कम पाई जाती है।

- **शंका के साथ-साथ समाधान भी उनके पास है**— छोटे बच्चे अपनी छोटी-छोटी समस्याओं का समाधान साथ लेकर चलते हैं। वे अपनी समस्या समाधान के लिए दूसरों पर आश्रित नहीं रहते जो उनके हौंसले, निर्णय व समस्या समाधान कौशल में बढ़ोतरी व निखार लाती है।

सुझाव

प्रारंभिक स्तर पर विद्यालय में विभिन्न तरीकों से उद्यमिता शिक्षा को बच्चों के बीच क्रियान्वित कर सकते हैं—

- अपनी शिक्षण-अधिगम विधियों में परिवर्तन व नएपन के माध्यम से जैसे खेल-खेल में या विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से या विभिन्न समस्याओं के माध्यम से, समूह चर्चा, प्रस्तुतीकरण आदि के अवसर देकर बच्चों को उद्यमिता के लिए बिना किसी दवाब के मानसिक रूप से तैयार कर सकते हैं।
- प्रारंभिक स्तर पर हमें अलग से कोई पाठ्यचर्या बनाने की आवश्यकता नहीं हैं, बल्कि इस स्तर पर हम इसे अन्य विषयों के साथ, जैसे— पर्यावरण अध्ययन, हिंदी, गणित आदि के साथ समन्वित और एकीकृत करके औपचारिक व अनौपचारिक रूप से स्वतंत्र रूप से बढ़ावा दे सकते हैं ताकि बच्चे की सर्जनात्मकता, उनकी कार्यशैली किसी बुने हुए ढाँचे के अंतर्गत ही फँस कर न रह जाए।
- बच्चों में रचनात्मकता, नवाचार और उद्यमिता को बढ़ाने के लिए उन्हें उचित स्वतंत्र वातावरण, अवसर और पर्याप्त सुविधा व सामग्री की व्यवस्था कर सकते हैं ताकि वे अपने मानसिक काल्पनिक विचारों को वास्तविक रूप दे सकें।
- विद्यार्थियों के छोटे-छोटे आविष्कारों, प्रदर्शनी लगाई जा सकती है, इसके लिए विद्यालय में कक्षा के स्तर के अनुसार एक प्रदर्शनी कमरा या एक प्रदर्शनी कोना तैयार किया जा सकता है, जहाँ उनके नए-नए रचनात्मक कार्यों को प्रदर्शित किया जा सकता है, जो सभी विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा व पुनर्बलन का काम करेंगे। इसके अलावा बच्चों को पुरस्कार भी दिया जा सकता है।
- विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार विभिन्न प्रकार के क्लब, जैसे— आर्ट क्लब, कार्यानुभव क्लब, खेल क्लब, उद्यमिता क्लब आदि बनाकर विद्यार्थियों को अपनी स्वतंत्रता के अनुरूप अपने पसंदीदा कार्य करने की अनुमति देकर उद्यमिता को बढ़ाया जा सकता है।
- समुदाय, गैर सरकारी सगठनों, निजी स्कूलों, बच्चों के अभिभावकों, व्यावसायिक विशेषज्ञों आदि को विद्यार्थियों के बीच लाकर विद्यार्थियों से मिलवाया जा सकता है और आवश्यकता के अनुरूप उनकी सहायता लेकर बच्चों की योग्यता व रुचि के अनुरूप लचीले पाठयक्रम तैयार किए जा सकते हैं।
- शिक्षकों को प्रारंभिक स्तर के बच्चों में उद्यमिता को कैसे विकसित किया जा सकता है, से संबंधित विशेष प्रशिक्षण दे सकते हैं। जिससे वे एक सलाहकार और मार्गदर्शक के रूप में बच्चों को प्रोत्साहित कर उद्यमिता का बीज विद्यार्थियों के मन और दिमाग में लाकर उनका पोषण कर सकते हैं।

- उद्यमिता शिक्षा को शिक्षक-शिक्षा में भी शामिल किया जाना चाहिए। इसके द्वारा शिक्षक न केवल स्वयं अपने अंदर उद्यमिता का गुण विकसित कर पाएँगे बल्कि उसे आगे भी अपनी कक्षा के बच्चों में विकसित कर सकेंगे।
- बच्चों की रचनात्मकता, नवाचार और उद्यमिता को बढ़ाने के ज़िम्मेदारी केवल शिक्षक तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसकी शुरुआत तो बच्चे के घर से प्रारंभ हो जाती है। इसलिए यह ज़रूरी है कि बच्चों के माता-पिता और अभिभावकों को भी इससे अवगत कराया जाए ताकि वे भी बच्चे द्वारा किए गए नए कामों, छोटी-छोटी खोजों के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें और बच्चों को उनकी रुचि व क्षमता के अनुसार स्वतंत्र रूप से कुछ नया करने का मौका दें और उसकी उपलब्धियों को साझा करें और उसे गलती पर धमकाएँ नहीं बल्कि यह बताने का प्रयास करें कि गलती करना सफलता प्राप्ति की प्रथम सीढ़ी है।

निष्कर्ष

उद्यमिता शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा आज की सबसे बड़ी माँग है और बेरोज़गारी की समस्या का समाधान भी है। इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यालय में प्रारंभिक स्तर से ही एकीकृत रूप से इसकी शुरुआत की जाए क्योंकि आयु बढ़ने के साथ-साथ विभिन्न कारणों की वजह अपनी आदतों, सोच और जोखिम उठाने की क्षमता में कमी आने लगती है और उनमें जल्दी से परिवर्तन करना आसानी से संभव नहीं हो पाता है जिसके कारण कई बार हमारे विद्यार्थी हताशा के रास्ते पर चले जाते हैं। प्रारंभिक स्तर पर हम बच्चों के अंदर आसानी से बिना किसी दबाव के स्वतंत्र एवं मौलिक रूप से उनकी प्रतिभाओं का विकास करते हुए उनमें उद्यमिता का गुण विकसित कर सकते हैं। जो आगे चलकर भविष्य में एक व्यवसाय के रूप में प्रफुल्लित होगा इसलिए हमें उद्यमिता को प्रभावी बनाने के लिए अपने कदम प्रारंभिक स्तर से ही उठाने चाहिए।

संदर्भ

अंकटाड. 2011. *विकासशील देशों में उद्यमिता शिक्षा, नवाचार और क्षमता निर्माण.* पृष्ठ संख्या1–21. http://www.cmai.asia/pdf/Skill%20India%20website%20-1-.pdf

उद्यमिता माइंडसेट पाठ्यक्रम. 2019. www.edudel.nic.in/emc

बिज़नेस ब्लास्टर. 2021. https://www.thehindu.com/news/cities/Delhi/delhi-launches-business

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* भारत सरकार, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/nep//NEP_2020.pdf

यूरोपियन कमीशन. 2013. *एंटरप्रेन्योरशिप एजुकेशन ए गाइड फ़ॉर एजुकेटर्स.* पृष्ठ संख्या 42. https://unevoc.unesco.org/home/Interregional%20seminar%20on%20entrepreneurship%20education

www.nqr.gov.in/national-skills-qualification-framework